International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 06-08

मार्क्सवाद और उसके आधारभूत सिद्धांतों में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिध्दांत

डॉ. अनिरूध्द प्रसाद [1], विजय कुमार [2]
[1] एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत।
[2] शोध छात्र, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत।

प्रस्तावना

मार्क्सवाद एक अत्यन्त चर्चित, राजनीतिक और सारगर्भित सिद्धांत जिसकी रचना मार्क्स और ऐंजल्स दोनों ने मिलकर की है। वास्तव में मार्क्स और ऐंजल्स दोनों के संयुक्त विचारों ने मिलकर ही पूरे मार्क्सवाद की सृष्टि की है। मार्क्स विलक्षण प्रतिभा के इन्सान थे। वैज्ञानिक समाजवाद के मूल सिध्दांतों के निरूपण मे उनकी देन एंजल्स की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थी। इसलिए वैज्ञानिक समाजवाद को मार्क्सवाद भी कहा जाता है। सैध्दांतिक क्षेत्र में मार्क्स के योगदान को कबूल करते हूए एंजल्स ने लिखा था – ''जो कुछ मैने किया है वह, मार्क्स मेरी सहायता के बिना भी कर सकते थे परंतु जो कुछ मार्क्स ने किया वह मेरे लिए संभव नहीं था। उसकी प्रतिभा उच्च कोटी की थी। अक्सर वह अधिक दूरदर्शी था। हम लोगों की अपेक्षा उसकी दृष्टि अधिक व्यापक और तीव्र थी। उसके बिना यह सिध्दांत अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकता था। अतः सिध्दांतों पर उसके नाम की छाप होना सर्वथा उचित है।''[1]

मार्क्सवाद पहला दर्शन है जिसने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, तथा इतिहास का आर्थिक विकास प्रस्तुत करके आध्यात्मवादी मान्यताओं को ठेस पहुँचाई। 'वर्ग संघर्ष' तथा 'अतिरिक्त मूल्य' के सिध्दांत द्वारा पूंजीवादी समाज के प्रभुत्व पर विशेष रूप से जोर दिया। मार्क्सवाद पहला दर्शन है, जिसने सर्वहारा वर्ग के प्रभुत्व को स्थापित करने की लिए एक व्यावहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

अतः स्पष्ट है कि मार्क्स के विचारों को ही मार्क्सवाद कहा जाता है। डॉ. जनेश्वर मिश्र ने लिखा है – ''ऐतिहासिक भौतिकवाद और अतिरिक्त मूल्यों का सिध्दांत'' इन दोनों सिध्दांतों का श्रेय कार्ल मार्क्स को दिया जाता है। मार्क्स और एंजल्स द्वारा प्रतिपादित समाजवादी दर्शन को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहते हैं। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के प्रकाश में मानव इतिहास और समाज के विकास क्रम की विश्लेषण पद्धति को ऐतिहासिक भौतिकवाद कहते हैं। 'अतिरिक्त मूल्य का सिध्दांत' वर्तमान पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था की गतिविधि का रहस्योद्घाटन करता है। एंजल्स के शब्दों मे ''इन दोनों ही महान अनुसंधानों के जनक मार्क्स हैं, इतिहास संबंधी भौतिकवादी धारणा द्वारा सामाजिक विकास को समझाने की प्रणाली का रहस्य प्रकट करने का श्रेय मार्क्स को जाता है। इस प्रकार इन सिद्धांतों ने वह आधारभूमि प्रस्तुत की है।''[2] मार्क्सवाद का सैद्धांतिक रूप मार्क्स के सिध्दांतों से ही स्पष्ट होता है। मार्क्स ने अपने सिध्दांतों की निम्न रूप में व्याख्या की है –

1. द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत
2. ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत
3. वर्ग–संघर्ष का सिद्धांत
4. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

मार्क्स के साम्यवादी विचारों का आधार द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है। इसे विरोध विकासवाद का सिध्दांत भी कहते हैं। दर्शनिकों एवं समाज शास्त्रियों का मत है कि द्वंद्वात्मक भौतिकवाद आर्थिक संघर्ष की संभावनाओं को व्यक्त करने वाला सिध्दांत है। इस सिध्दांत में मार्क्स ने भौतिक तत्वों को आधार बनाकर सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट करने का प्रयास किया है। विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का मूल कारण क्या है? यह पैसा है। ऐसा मार्क्स का मानना है। उनके अनुसार संघर्ष से ही विकास होता है, यह उन्होंने आपने सिद्धांत के द्वारा प्रतिपादित किया है। आज तक के समाज का इतिहास बताता है कि उसमें किस प्रकार का संघर्ष होते–होते विकास हुआ है। वास्तव में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत तर्क–विर्तक पर आधरित है। मार्क्स ने इस सिद्धांत में आर्थिक क्रियाओं को प्रधानता देकर अपने तर्क की पुष्टि की है, इस सिद्धांत के आधार पर वे बताना चाहते हैं कि पूंजीपति वर्ग नष्ट हो और वर्ग विहीन साम्यवादी समाज की रचना हो। यही इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने का उद्देश्य है।

द्वंद्ववाद की कल्पना सबसे पहले ग्रीक राज्य में 'सोफिस्टो' एवं ग्रीक विचारकों ने किया था। इस कल्पना पद्धति का उपयोग न्याय–व्यवस्था के मंच पर किया जाता था। अफलातून ने भी द्वंद्ववाद को महत्व दिया था। इस प्रकार द्वंद्ववाद की कल्पना पुरानी है। ही गेल के मतानुसार द्वंद्व अर्थात तर्क शुद्ध विचार से विकसित होते रहते हैं। इस विकास की अवधि में कुछ प्रश्नों के उत्तर नहीं मिले, उन्हीं प्रश्नों के उत्तर देने का कार्य द्वंद्वात्मक पद्धति में किया जाता है। ही गेल कहते है कि विरोधाभास निसर्गतः मिलता है। इसमें समतोल साध्य करने का प्रयास हीगेल ने किया।

''द्वंद्व से तात्पर्य यह है कि संघर्ष 'द्वंद्वात्मक पद्धति' संघर्ष पर बल देती है। मार्क्स के अनुसार द्वंद्वात्मक पद्धति के द्वारा मानस संसार का विकास होता है। प्राचीन काल में भी सत्य को जानने के लिए तर्क किया जाता था, इस तार्किक भूमिका को खंडित करने के लिए वितर्क करने पर सर्वमान्य सत्य की खोज होती है। और यही तर्क प्रणाली द्वंद्वात्मक स्वरूप ले लेती है। इस संबंध में लेनिन ने कहा था– ''सही अर्थों में द्वंद्वात्मक विरोधी बातों का अध्ययन ही विकास विरोधी बातों में संघर्ष का परिणाम है।''[3]

भौतिकवाद को स्पष्ट करते हुए मार्क्स ने कहा था ''जो वस्तु या पदार्थ मूर्त रूप में ऑखों को दिखाई देती है। उसके अस्तित्व को स्वीकार करना ही भौतिकवाद है। जगत को या प्रकृति की यथार्थता का मान्य करना ही भौतिकवाद है। इस जगह आदर्शवाद को जान बूझकर दूर रखना बुद्धि के निष्कर्ष पूर्व यथार्थता का विचार करना ही भौतिकवाद है।''[4]

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत मार्क्स के संपूर्ण चिंतन का मूल

आधार है। इस संबंध में रूस की प्रसिद्ध विद्वान वि. अफनास्येव ने लिखा है– ''मार्क्स का द्वंद्ववाद का विचार हीगेल से तथा भौतिकवाद का सिध्दांत फायरबाख से लिया था। इन दोनों के सम्मिश्रण ने द्वंद्ववाद को एक नई मौलिक दिशा प्रदान की। इसी सिद्धांत के आधार पर समस्त साम्यवादी अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन करते हैं। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत मार्क्स ने अपने प्रमुख ग्रंथ 'साम्यवादी' पथ का हलफनामा में प्रतिपादित किया था। इसका स्पष्ट उल्लेख 'सामाजिक इतिहासों के विचार' नामक ग्रंथ में मिलता है। मार्क्स ने इस रचना में नए विश्व दृष्टिकोण और ऐसे सुसंगत भौतिकवाद की रूपरेखा प्रस्तुत की, यह सामाजिक जीवन क्षेत्र मे ही होती है ऐसा नहीं बल्कि इसमें मानव विकास को सबसे अधिक व्यापक और गहन सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठा मिली मार्क्स ने द्वंद्ववाद की कल्पना हीगेल से ग्रहण की किंतु उसको एकदम उल्टा कर दिया।''[5] हीगेल के विचारों को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए विचार को ही सत्य मानते है। उनके अनुसार विचारों से ही परिवर्तन होता है। समस्त पृथ्वी की जड़–चेतना की वस्तुएं, विचारों की मात्र परछाई हैं। इसलिए मार्क्स कहते है। –''मेरी द्वंद्वात्मक प्रणाली हीगेल से मूलतः भिन्न है। वरन उससे नितान्त विरोधी दिशा में हैं।''[6]

हीगेल के अनुसार वास्तविक जगत का निर्माण चिंतन क्रिया की प्रेरक शक्ति से हुआ है। विचार क्रिया को विचार तत्व नाम देकर वह उसके स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार करता है। वह कहता है कि विचार तत्व वास्तविक जगत का निर्माण करता है। हीगेल के लिए वस्तु जगत विचार तत्व का माध्यम घटनात्मक स्वरूप है। इससे विपरीत मार्क्स की दृष्टि से विचार मानव चित्र में प्रतिबिम्बित भौतिक संसार को छोड़कर और कुछ नहीं है। चिंतन क्रिया में भौतिक संसार का ही रूपांतरण है। इसी को स्पष्ट करते हुए मार्क्स ने कहा है– ''हीगेल का द्वंद्वात्मक सिद्धांत सिर के बल खड़ा था मैंने उसे पैर पर खड़े करने का काम किया, मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है कि हीगेल नें द्वंद्वात्मक पद्धति को अपनाया परंतु उसके उद्देश्य अलग हैं। हीगेल ने सृष्टि एवं मानव परिवर्तन के लिए विचार को महत्त्व दिया, किंतु मार्क्स ने पदार्थ को महत्त्व दिया। मार्क्स के अनुसार सृष्टि या प्रकृति का विकास यह परस्पर द्वंद्व से होता है। परंतु यह द्वंद्व पदार्थ में होता है। इसलिए मार्क्स के अनुसार पदार्थ ही सत्य है।''[7]

मार्क्स के अनुसार पदार्थ के कारण ही विचारों का जन्म होता है। अर्थात हीगेल ने विचार को वास्तविक मानते हुए बाह्य जगत को विचारों की परछाई मात्र समझा। जबकि मार्क्स ने वस्तुवादी जगत को वास्तविक मानते हुए विचारों को उसकी परछाई माना। मार्क्स ने द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को इस प्रकार स्पष्ट किया है– पूंजीवादी समाज व्यवस्था में पूंजीपति (Thesis) और मजदूर–वर्ग प्रतिवादी (Anti-Thesis) हैं और इन दोनों के संघर्ष या द्वंद्व से नया समाजवादी समाज रचना संवाद (Synthesis) का निर्माण होता है। 'वाद', 'प्रतिवाद', 'संवाद' यह क्रिया तब तक चलती रहती है जब तक आदर्शवादी समाज की रचना न हो मार्क्स ने इसी प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए द्वंद्ववाद के सामान्य नियम बतलाए हैं–

विरोधी समागम का नियम

लेनिन के अनुसार ''विपरीतों की एकता और संघर्ष का नियम द्वंद्ववाद का सार तत्व है। जो मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को जन्म देता है।'' वह नियम प्रकृतिक गतिशीलता के रहस्य को स्पष्ट करता है। गति उस समय उत्पन्न होती है जब विरोधी शक्तियों का मिलन और संघर्ष होता है।

मार्क्स ने इसका वैज्ञानिक उदाहरण देते हुए कहा है–'' हर एकता में विरोध पाया जाता है, जैसे एक चुम्बक है, इसके दो सिरे परस्पर विरोधी होते हैं। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव, यदि वे पृथक एवं परस्पर विरोधी हैं तो भी अलग–अलग नहीं रह सकते। अर्थात चुम्बक के उत्तरी धुव्र और दक्षिणी ध्रुव का वह भाग अलग कर दिये जाएं तो उसमें भी यह दो भाग देखने को मिलते हैं।'' [8] इस उदाहरण के आधार पर मार्क्स का मानना है कि श्रमिक और पूंजीपत एक दूसरे के विपरीत वर्ग चरित्र होते हुए भी एक एकबद्ध पूंजीवादी समाज का निर्माण करती है। विपरितों का यह परस्पर निबंधक, नूतन के मध्ये, परस्पर जनित और आधुनिक के मध्य संघर्ष को जन्म देता है।

मात्रा भेद से गुण भेद

जब हम स्वीकार कर लेते हैं कि संसार की हर वस्तु परिवर्तनशील है तब यह सिद्ध हो जाता है कि किसी वस्तु का गुण स्थिर एवं स्थायी नहीं होता। उसमे भी क्योंकि मात्रा में भारी अंतर होने से अंतर पड़ जाता है। जैसे पानी का तापक्रम एक निश्चित सीमा से आगे बढ़ जाने पर वह भाप बन जाता है इसी प्रकार पानी का तापक्रम यदि निश्चित सीमा से घट जाए तो पानी हिम बन जाता है। अर्थात मात्रा पानी का ताप घटाने या बढाने का है तो उसका गुण पानी का भाप या हिम होना है। वैसे ही प्रकृति में भी परिवर्तन होता रहता है किन्तु वह निश्चित क्रम तक पहुंच जाए तो उसका परिवर्तन निश्चित होता है। ठीक इसी प्रकार मार्क्स सामाजिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन को क्रांति मानता है। मार्क्स क्रांति की स्वाभाविकता को सिद्ध करने के लिए इस नियम का उपयोग करते है। मार्क्स का मत है कि 'परिणात्मक से गुणात्मक परिवर्तन करने वाली यह क्रांतियॉ समाज के विकास में विशेष महत्त्व रखती है। यह पुरातन सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करके नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करती हैं।''[9]

प्रतिषेध का नियम

यह प्रकृति का नियम है कि संसार की प्रत्येक वस्तु गतिशील है। इसी गतिशीलता से वस्तु में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष की दिशा एक शक्ति दूसरी शक्ति का प्रतिषेध करती है जिसके फलस्वरूप एक नई व्यवस्था उत्पन्न होती है। कालान्तर में फिर उस नयी वस्तु में संघर्ष निर्माण होता है। फिर उसका प्रतिषेध होता है। इस प्रकार प्रतिषेध करके प्रत्येक वस्तु विकास के चरम अवस्था में पहुंच जाती है।

प्रतिषेध से हमारा तात्पर्य है कि, उस क्लिष्ट विलीन वस्तु की स्थिति को हम पहली अवस्था कहें तो उस वस्तु के विनाश हो जाने से जो नई वस्तु या स्थिति उत्पन्न होगी उसे हम प्रतिषेध कहते हैं। फिर इस वस्तु को क्लिष्ट और विलिन हो जाने से जो नई वस्तु या स्थिति उत्पन्न होगी उस तीसरी अवस्था को हम प्रतिषेध का प्रतिषेध कहते हैं। इस संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन लिखते है– '' द्वंद्ववाद के ध्वंस रचना कार्य की तीसरी सीढ़ी प्रतिषेध का प्रतिषेध है।'' इस नियम के अनुसार मार्क्स का कहना है – ''पूंजीवादी व्यवस्था का विकास में ही उसके विनाश की बीज होते हैं। इससे ऐसी समाज व्यवस्था का निर्माण होता है कि व्यक्तियों पर होने वाले शोषण एवं अत्याचारों का नाश हो जाता है। अर्थात साम्यवादी समाज व्यवस्था का निर्माण होता है। उपर्युक्त विवेचन से मार्क्स का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत स्पष्ट होता है।

संदर्भ सूची

1. क्रांतिकारी ऋषि कार्ल मार्क्स : लाला हरदयाल, पृ. 10
2. कैपिटल सारग्रंथ : पा॰व॰ गाडगिल, पृ. 241

3. मार्क्स और एंजल्स : दरिद्रता का तत्वज्ञान, पृ. 42
4. आधुनिक यूरोप : प्रो॰ टी॰ के विरदार, पृ. 10
5. मार्क्स और एंजल्स : दरिद्रता का तत्वज्ञान, पृ. 44
6. मार्क्स और एंजल्स साम्यवादी घोषणा पत्र, पृ. 65
7. कार्ल मार्क्स की जीवनी : मि॰ स्पारगो, पृ. 41
8. क्रांतिकारी ऋषि कार्ल मार्क्स : लाला हरदयाल, पृ. 11
9. पाश्चात्य राजनीति का इतिहास : बी॰ एल॰ फाडिया, पृ. 621